ISSN 2349 - 137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

प्रतिध्वनि कला संस्कृति की

अनहद लोक

वर्ष-8, अंक -15, 2022
(जनवरी-जून)

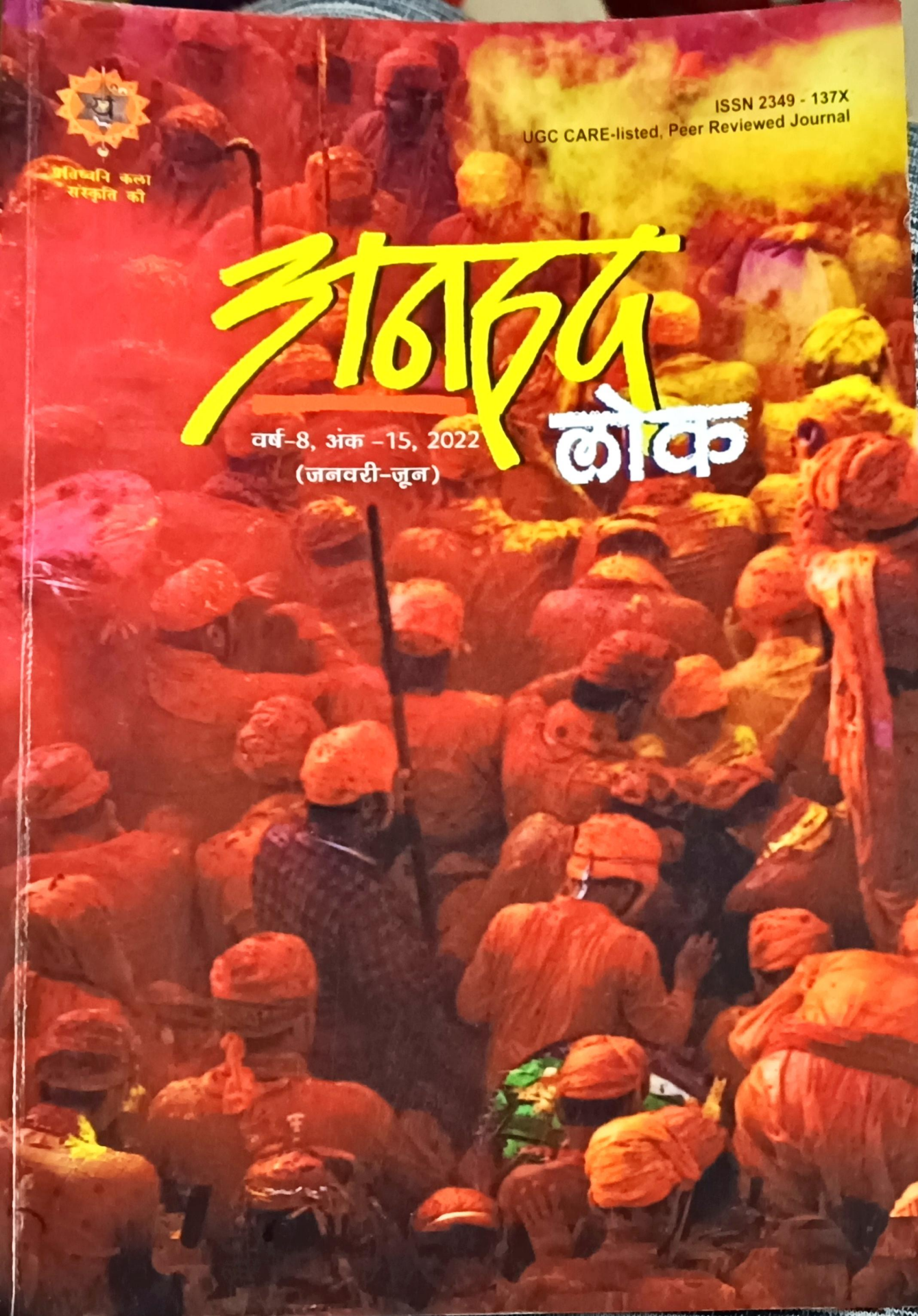

थाती

17. महाराष्ट्रीयन संस्कृति के त्यौहार से संगीत का पारस्पारीक अनुबंध -प्रो. वंदना म.देशमुख 105
18. काँगड़ा के संस्कार व लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन -डॉ मंजु पुरी 109
19. ब्रज के लोक जीवन में राम -डॉ0 शेफाली चतुर्वेदी 114
20. लोक खेलः विरासत की अद्भुत परम्परा -डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला 121
21 होली गायनः एक रंगारंग परम्परा -डॉ. मधुमिता भट्टाचार्य 126
22 मण्डी जनपद विशेष की पारम्परिक नृत्य संगीत परम्परा : बुढड़ा नृत्य -डॉ0 हेमराज चन्देल 130
23. भारतीय लोक कला में बुन्देली लोक चित्रकला का स्वरुप - डॉ0 सचिव गौतम 134
24. वाचिक लोक कथाओं की भारतीय परम्परा' -डॉ. अमित कुमार पाण्डेय 140
25. फाल्गुन मास में गाये जाने वाले उप शास्त्रीय व लोक गीत प्रकार -डॉ0 श्वेता केशरी 145

सौन्दर्य

26. Colour Therapy: Therapeutic benefits of Colours -Dr. Shalini Tiwari 153
27. Perceiving Beauty and Truth: A Study of Mizo Idioms and Expressions -Dr. R. Zothanliana -Prof. H. Malsawmi 158
28. Contribution of Ustad Sharafat Hussain Khan to Indian Classical Music Dr. Alok Acharjee 165
29. विद्याधरी बाईः तुम्हारी आवाज़ में तुम्हारी जड़े हैं -डॉ. मनीष कुमार मिश्रा - डॉ. उषा आलोक दुबे 169
30. दिनेश कुमार शुक्ल की कविताओं में चित्रित ग्राम्य-बोध -डॉ. चन्द्रकान्त सिंह 175

साहित्यिकी

31. दो पाटन के बीच -प्रो0 (डॉ0) छाया सिन्हा 183
32. नन्द चतुर्वेदी की रचनाओं में सामाजिक संदर्भ -डॉ. विदुषी आमेटा -संगीता भारद्वाज 194
33. Poetry in the Time of Terror: the Uneasy Homeland in Contemporary Anglophone Poetry of Assam -Dr. Dharmendra Baruah 199
34. 'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित चेतना -डॉ. जी. वसंती 205
35. महिला कथाकारों की कहानियों में स्त्री-विर्मश का स्वरूप -डॉ0 अजय सिंह यादव 211
36. प्रो. सोमा बंधोपाध्याय की कहानी 'इति कवि कथा' की समीक्षा-डॉ. अभिषेक मिश्र 218
37. A Jungian Approach to Ben Okri's Starbook -Anusha A 222

दिनेश कुमार शुक्ल की कविताओं में चित्रित ग्राम्य-बोध

डॉ. चंद्रकान्त सिंह

सहायक आचार्य (हिन्दी)
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सारांश

प्रस्तुत आलेख में समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर दिनेश कुमार शुक्ल की कविताओं में अभिव्यक्त गँवई-चेतना के अध्ययन का प्रयास किया गया है। दिनेश कुमार शुक्ल अपनी कविताओं के द्वारा प्रकृति एवं मनुष्य के सहजीवन की अद्भुत आपसदारी रचते हैं। उनकी कविताओं में लोक अपनी उसक के साथ अभिव्यक्त होता है, प्रकृति के साथ कदम कदम पर कवि का जुड़ाव दिखता है। यही नहीं उनकी कविताएँ किसानी संघर्ष को दिखाने के साथ किसानी जीवन की मस्ती, आह्लादकता और प्रेम को भी दर्शाती हैं। इन कविताओं की सबसे बड़ी खूबी इनका जीवन-केन्द्रित होना है यही कारण है कि विपुलता, व्यापकता एवं एकतानता इन कविताओं का केन्द्रीय स्वर है।

वैश्वीकरण की आहट ने गाँवों को बदल कर रख दिया है; कवि ने अपनी कविताओं में जिस ग्राम्य-जीवन को दर्शाया है वह परिवर्तित है। संस्कृति का विघटन भी दिनेश जी की कविताओं में दिखता है किन्तु किसानों के अदम्य साहस, दृढ़ व्यक्तित्व एवं जीवन के प्रति स्वीकार-बोध ने कविता को जड़ एवं तापहीन बनने से बचाया है। पूँजी के अथाह प्रसार एवं बाजारवाद की भौतिक चकाचौंध से दिनेश कुमार शुक्ल की कवितायें न केवल टकराती हैं बल्कि बाजारवाद का विकल्प भी प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। पूँजी के वीभत्स रूप और किसानों के प्रति दमनतंत्र को भी दिनेश कुमार शुक्ल की कविताएँ बखूबी समझती हैं यही कारण है कि इन कविताओं में आर्तनाद है, पीड़ा है और अतीत को सहेजने का बोध भी है। लोक-संवेदना के विरूपित सच को दर्शाने के साथ-साथ दिनेश कुमार शुक्ल की कवितायें बाजार के वास्तविक चरित्र को खोलने का कार्य करती हैं। ग्राम्य जीवन की अनगढ़ता, तनाव एवं विषमता इन कविताओं में दिखती है किन्तु इसके साथ मनुष्य की जीवटता, संषर्ष और प्रतिरोध की बानगी भी इन कविताओं का मूल रूप है जिसे कवि ने शब्दबद्ध किया है।

प्रस्तुत आलेख में ग्राम्य जीवन की सहकारिता, सहयोग-भावना, मैत्री आदि को दर्शाने के साथ भाषिक स्तर पर हुए परिवर्तनों को भी देखने-समझने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द

लोक-संसक्ति, वैश्वीकरण, ग्रामीण-बोध, लोक-माटी, जीजिविषा-शक्ति